ओम शान्ति मीडिया का नवीन संकलन सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरुषार्थ -कथा सरिता, हैपिनेस इन्डेक्स, गीता का आध्यात्मिक रहस्य उपलब्ध है ।

सबसे जहरीला विष

विकासपुर के राजा थे राजसिंह। एक बार वे अपने दरबार में बैठे अपने मंत्रियों और विद्वानों के साथ किसी विषय पर मंत्रणा कर रहे थे कि अचानक बीच में ही बोल उठे, क्या कोई मुझे यह बताएगा कि सबसे तेज कौन काटता है और सबसे जहरीला विष किसका होता है? यह सुनकर वहां बैठे सभी लोग एक-दूसरे की ओर देखने लगे। बहुत सोचने के बाद किसी ने सांप को सबसे तेज काटने वाला और जहरीला बताया, किसी ने ततैया तो किसी ने मधुमक्खी बताया। पर राजा किसी की बात से संतुष्ट नहीं हुए। तभी रमाकांत नाम के एक युवा विद्वान ने उठकर कहा, महाराज, मेरे हिसाब से तो सबसे तेज और जहरीले निंदक और चाटुकार होते हैं। जो सच्चे निंदक होते हैं वे तो सही राय देते हैं परंतु जिसके हृदय में द्वेष रूपी जहर भरा रहता है वह व्यक्ति की निंदा करके पीछे से ऐसे काटता है कि मनुष्य पीड़ा से तिलमिला उठता है। चाटुकार अपनी बोली में मीठा विष भरकर ऐसी चापलूसी करता है कि व्यक्ति अपनी कमियों को भी खूबी समझकर अहंकार के नशे में चूर हो जाता है। इस तरह चापलूस की वाणी व्यक्ति के विवेक को जड़मूल से नष्ट कर देती है। इस जवाब से सभी संतुष्ट हो गए।

दीव। राजयोग शिविर का कोर्स कराने के पश्चात् ग्रुप फोटो में हैं माउण्ट आबू की राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.गीता, सेवाकेंद्र की संचालिका ब्र.कु.गीता एवं शिविर में भाग लेने वाले प्रतिभागी।

प्रश्न:- हमारे सेंटर में सात दिन का कोर्स करने बहुत लोग आते हैं, परन्तु ज्ञान में आगे बढ़ते नहीं। हमें लगता है कि हमारी मेहनत व्यर्थ जाती है, हम क्या करें जो कोर्स करने वाले शिव बाबा के बच्चे बन जाएं?

उत्तर:- प्रभु मिलन का भाग्य केवल पुण्यात्माओं को ही प्राप्त होता है। आपकी ये शुभभावना तो प्रशन्सनीय है कि सभी शिव बाबा से अपना अधिकार ले लें परन्तु कोटों में कोई ही इस भाग्य का अधिकारी बनता है। सात दिन में दिया गया ज्ञान, उनकी बुद्धि में कुछ न कुछ रहता अवश्य है। परन्तु बात जब पवित्रता की धारणा की आती है तो आत्माएं पीछे हट जाती हैं। मैं यहाँ कुछ बातें कोर्स कराने वालों को कहना चाहता हूँ, आप इन पर ध्यान दें। आप विचार करें कि हमारे पास लोग ज्ञान लेने क्यों आते हैं? उनके पास अशांति है, तनाव है या उनके जीवन में बहुत समस्याएं हैं, वे कुछ पाना चाहते हैं वे समाधान चाहते हैं। कइयों को उनका दु:ख आपके पास लाता है, वे सुख की अनुभूति चाहते हैं। इसलिए हम उन्हें वही ज्ञान दें जिनसे उनकी समस्याओं का समाधान हो, जिससे उन्हें अनुभूति हो और उनकी आंतरिक शक्तियां बढ़े। वही पुराना कोर्स रिपीट करने से अब सफलता नहीं मिलेगी, हमें कोर्स का नवीनीकरण करना चाहिए। जैसे-जैसे समय बदल रहा है वैसे-वैसे हमारे ज्ञान देने के तरीके भी बदलने चाहिए।

दूसरी बात - ज्ञान देने वालों की स्थिति पर सफलता का आधार है। स्वयं को जितनी अच्छी अनुभूति होगी, उतना ही अच्छा अनुभव हम दूसरों को करा सकेंगे। यदि हम केवल रटा रटाया कोर्स करा रहे हैं तो सफलता कम होगी। हमारी पवित्रता व योग-बल कोर्स करने वालों को बाबा की ओर आकर्षित करेंगे।

जब आप आत्मा का ज्ञान दें तो एक घण्टा ज्ञान न देकर उन्हें अनुभूति पर लायें। स्वयं आत्माभिमानी होने का अच्छा अभ्यास करें व उन्हें भी आत्मिक दृष्टि से देखकर ज्ञान दें। ज्ञान देने से पहले तीन मिनट योग करें व स्वयं को स्वमान में स्थित करें कि मैं इनकी पूर्वज हूँ व इष्ट देवी हूँ, ये भी देव कुल की महान आत्मा है। आज तक देखा गया है कि जिनका योगाभ्यास चार घण्टे प्रतिदिन है, वे जिन्हें भी ज्ञान देते हैं, वे बाबा के बच्चे बन ही जाते हैं।

प्रश्न:- हमें अपने सेन्टर को निर्विघ्न बनाना है... हमें क्या-क्या ध्यान रखना होगा? क्योंकि बाबा की ये शुभ-इच्छा है कि कोई सेंटर निर्विघ्न होकर दिखाये। हम बाबा की इस श्रेष्ठ इच्छा को पूर्ण करना चाहते हैं।

उत्तर:- आपकी ये श्रेष्ठ कामना...आपको ईश्वरीय मदद की अधिकारी बनाती है। यही बात विशेष रुप से ध्यान रखनी है कि जितना हम निर्विघ्न होंगे उतने ही हमारे सेवास्थान निर्विघ्न होंगे। जिस सेवा स्थान पर प्रतिदिन ब्रह्ममुहूर्त में योग का शक्तिशाली वातावरण बनता है, वहां आने वाले विघ्न सहज ही नष्ट हो जाते हैं। बाबा ने स्वयं ही कह दिया है कि यज्ञ में असुरों के विघ्न पड़ते हैं। तो छोटे-मोटे विघ्न तो आयेंगे ही परन्तु हमें बाबा से विघ्न विनाश करने की शक्ति मिली है। कई बहनें बताती हैं कि जब भी उनके यहाँ कोई विघ्न आया, उन्होंने योग-साधना चालू की, सभी भाई-बहनों ने योग किया और विघ्न नष्ट हो गया। तो इस तरह योगबल से विघ्न-मुक्त बनें। हम कलियुग के गहन अंधकार में जी रहे हैं, अंधेरा तो अंधेरा ही होता है, अर्थात विघ्न तो आयेंगे ही, परन्तु हमें अपनी स्थिति को विघ्न-स्वरुप नहीं बनने देना है।

याद रहे किसी भी तरह की अपवित्रता, क्रोध या अहंकार विघ्नों का आह्वान करते हैं। आपको अपने

सेवास्थान को ऐसा बनाना है जहाँ व्यर्थ का नामोनिशान न रहे, टकराव न हो। तो जहाँ व्यर्थ नहीं वहाँ विघ्न भी नहीं। अपने स्थान के वायब्रेशन्स को पावरफुल बनाने के लिए वहाँ अच्छी क्लास व सुंदर गीत बीच-बीच में चलते रहें। सुंदर शब्दों से सुंदर वायब्रेशन्स फैलते हैं। ध्यान रहे कि भगवान के बच्चे ही उसके यज्ञ में विघ्न न डालें। इसके लिए उन्हें ज्ञान-योग में भी रूचि दिलानी है।

प्रश्न:- आप कहते हैं कि हमारे प्रत्येक संकल्प में रचनात्मक शक्ति है। परन्तु हम कभी-कभी देखते हैं कि श्रेष्ठ संकल्प करने के बावजूद भी हमें वैसा ही परिणाम नहीं मिलता। इसका कारण व निवारण क्या है?

उत्तर:- यह सम्पूर्ण सत्य है कि जो संकल्प हम बार-बार करते हैं, उसका हम निर्माण करते हैं, यह बात बहुतों के अनुभवों में आ रही है, परन्तु कहीं-कहीं हमारे पूर्व के पापकर्मों से निकली निगेटीव एनर्जी इतनी प्रभावकारी होती है कि वो श्रेष्ठ संकल्पों की एनर्जी को नष्ट कर देती है। अत: हमें योग-अभ्यास से अपनी आंतरिक शक्ति को बहुत बढ़ाना चाहिए ताकि पॉजिटीव एनर्जी निगेटीव एनर्जी को प्रभावकारी न होने दे।

प्रश्न:- हम संकल्प शक्ति का कोई सुंदर अनुभव सुनना चाहते हैं?

उत्तर:- गुड़गांव का एक इंजीनियर किसी कम्पनी में कार्यरत था। ये घटना नजदीक की ही है। वे उसे पैंतीस हजार रूपये प्रति माह दे रहे थे। उसने जॉब चेंज करने की सोची और एक दूसरी कम्पनी में आवेदन किया। जब वह इन्टरव्यू देने गया तो इस स्वमान में स्थित होकर गया कि मैं इस डायरेक्टर का पूर्वज हूँ। परिणाम क्या हुआ? जैसे ही वह डायरेक्टर के कक्ष में गया तो उसे देखते ही डायरेक्टर ने कहा कि मैं तो आपको जानता हूँ और कोई सहज प्रश्न पूछकर ही कहा कि कल से आप आइये और पचपन हजार रुपये प्रति माह उसकी तनख्वाह भी निश्चित कर दी। जैसी स्मृति में हम रहते हैं वैसा ही हमें दूसरे देखते हैं।

प्रश्न:- मैं एक माता हूँ। मेरी पूरा जीवन विघ्नों से भरा है, मेरा मन बहुत परेशान रहता है, चित्त चैन नहीं पा रहा है.. मुझे कोई सरल विधि बातइये।

उत्तर:- जो कुछ भी किसी मनुष्य के साथ हो रहा है, वह उसके द्वारा ही पूर्व में किये गये कर्मों का परिणाम है। जिसने दूसरों को बहुत कष्ट दिये हैं, उसे मानसिक कष्ट बहुत हो रहे हैं। विडम्बना यही है कि मनुष्य जब पापकर्म करता है तो वह आनंदित होता है, उसके परिणाम पर वह जरा भी विचार नहीं करता है। आप अपने चित्त को शांत कर सकती हैं। विश्व ड्रामा के ज्ञान पर चिन्तन करो और जो कुछ हो रहा है, उसे स्वीकार करके साक्षीभाव से देखो। व्यर्थ से बचो। दूसरों को न देख अब स्वयं को देखो। परिस्थितियों के चिन्तन के बजाय स्वस्थिति बढ़ाने का उपाय करो। पुण्य कर्म बढ़ाओ। सबेरे का योग व मुरली सुनना नियमित करो। निश्चित रुप से आप बहुत निगेटीव हैं, स्वयं को पॉजिटीव करो। प्यार बाँटो, कामनाओं की प्यासी नजर से दूसरों की ओर न देखो। और १०८ बार अभ्यास करो कि... मैं आत्मा शांत चित्त हूँ। चित्त शान्त हो जाएगा। प्रतिदिन ये अभ्यास करो।

यू.के.। नेशनल पार्क 'सांप-सीढ़ी' के आध्यात्मिक खेल द्वारा जीवन में उतार-चढ़ाव और जीवन में मूल्यों का महत्व का अनुभव करते हुए बच्चे।